UGC Approved
Refereed Journal
UGC
Jr.No.43053

Printing Area

International Multilingual Research Journal

Issue-32, Vol-06, August 2017

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2017, Issue-32, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

Printing Area is UGC approved journal. It is monthly published from Beed (Maharashtra). UGC approval number of Journal is 43053 On the official website of UGC i.e. http://www.ugc.ac.in/journallist There is a list of universities recommended and UGC approved journals. For the placement of assistant professors to the associate professor and of associate professor to the professor. API is different at every level. And for these selection grades UGC has referred some journals. It is obligatory to publish research articles and papers in UGC referred (approved) journals only. So before submitting your paper it is necessary to check the approval of UGC to that particular journal. You can check UGC approved journals on www.vidyawarta.com. In the search box of UGC website if you type the name of our journal i.e. Printing Area, you will get all the details of our journal. In the search box you can also type our ISSN 2394 5303 or UGC serial number 43053 and confirm.

In the upcoming issue of international journal Printing Area the research papers and articles are invited in English, Marathi and Hindi languages. You can send your article on any theme to us on vidyawarta@gmail.com The last date for sending the articles is 20th of every month. You will be sent one copy of Journal containing your article by registered post. Please write in detail your address with pin code.

Thanking you......

Editor,

Dr.Bapu G.Gholap,

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd

Beed (Maharashtra)

09850203295, 07588057695

vidyawarta@gmail.com

Printing Area UGC Jr.No.43053 UGC Approved Refereed Journal

Scanned with CamScanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 4.002(IIJIF)
Printing Area
August 2017
Issue-32, Vol-06

Index

01) An Empirical Study as pilot project of Influence of Social Media on.....
Saurabh—Kusum Lata, Punjab || 10

02) PORTRAYAL OF INDIAN YOUTH IN THE NOVELS OF CHETAN BHAGAT
Purushottam Bathe—Dr. Manorama—H.S. Pundkar, Akola || 18

03) Environmental & Ecological History: Recent Trend in Contemporary......
Mr. Bhimashankar M.Birajdar, Wai–M.S. || 21

04) Encourage Environmental Education for Sustainable Development:......
Nibedita Chowdhury, Assam || 24

05) MALNUTRITION & ITS IMPACT ON HEALTH STATUS OF PRESCHOOL CHILDREN....
Harshad B. Maldhure, Amravati || 27

06) The Historical Background of Chapparband De-notified Tribe
Sabiha Naz, Hampi || 30

07) START-UP INDIA—AN OVERVIEW
Pramila Devi, Jind-Haryana || 33

08) Rajarshi Shahu Maharaj the Social Reformer
AVINASH ATMARAM NIKAM || 38

09) Use of RFID Technology in Libraries
Navneet Kumar Sharma, Varanasi, U.P. || 41

10) Pesticides: their benefits and hazards
Seema Sharma, Meerut || 45

11) The Gurdwaras of Guru Hargobind Singh: A Brief Study
Jasvir Singh, Chandigarh. || 46

12) IMPLEMENTATION OF RIGHT TO EDUCATION ACT:CHALLENGES & REMEDIES
Dr. OM PAL SINGH, Kanpur (U.P.) || 52

13) A Study on the Comfort and the Pattern making Method of.....
Vijay Pal Singh—Dr. Divya Hiran, Rajasthan || 55

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

27) श्री संत तुकाराम महाराजांच्या प्रभावळीचे वारकरी संप्रदायातील स्थान व महत्व
प्रा. डॉ. शेटे देविदास मल्हारी, जि. अहमदनगर || 122

28) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ० मंजूषा अवस्थी, लखनऊ || 125

29) ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन मे गैर–सरकारी संगठन की भूमिका
डॉ. आयशा अहमद–डॉ. महेन्द्र शर्मा, दुर्ग (छ.ग.) || 130

30) वेदों के अर्थबोध में आचार्य यास्क का योगदान
पुष्पलता, मुज़फ्फरनगर || 132

31) रंगभूमि उपन्यास:औद्योगिक समस्या एवं सामाजिक संघर्ष
डॉ. जुगल किशोर कुजूर, जिला–सरगुजा छ०ग० || 138

32) डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की ग़ज़लों में अभिव्यक्त रिश्तों की घूटन
प्रा. भगवान बाबूराव भालेराव, जिला जलगाँव (महाराष्ट्र) || 143

33) नई सदी के साहित्य में शरणार्थी विमर्श
नीता दौलतकर, धारवाड || 147

34) मानवतावादी दृष्टिकोण और भारतरत्न-डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर
डॉ. आर. के. जाधव, जिला धुलियाँ (महाराष्ट्र) || 149

35) हिंदी साहित्य में नारी विमर्श
प्रा. संजय प्रल्हाद महाजन, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र) || 151

36) हिंदी भाषा का महत्व:वैश्वीकरण के विशेष परिप्रेक्ष्य में
डॉ. मनोहर हिलाल पाटील, जि. नंदूरबार (महाराष्ट्र) || 154

37) डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में व्यक्त सामाजिक चिंतन
प्रा. डॉ. महेंद्र जयपालसिंह रघुवंशी, नंदुरबार (महाराष्ट्र) || 158

38) समकालीन ग़ज़लकार कुँअर बहादुर सक्सेना की ग़ज़लों में सामाजिक संवेदना
डॉ. संजय विक्रम ढोडरे, धुले, ता. जि.-धुले || 160

39) हिन्दी दलित आत्मकथा लेखन:एक विमर्श
डॉ० सियाराम, औरैया (उ० प्र०)। || 163

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

31

रंगभूमि उपन्यास:औद्योगिक समस्या एवं सामाजिक संघर्ष

डॉ. जुगल किशोर कुजूर
सहा०प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय श्यामा प्र०मुखर्जी महा०
सीतापुर, जिला–सरगुजा छ०ग०

****

सारांश–

"रंगभूमि" में प्रस्तुत समस्याएं आयाम को छूते हुए सामाजिक स्थिति का सही विवरण प्रस्तुत करके जनजागरण का संदेश देती है। औद्योकीकरण "रंगभूमि" की प्रधान समस्या है। प्रेमचंद ने इस समस्या का निरूपण कर सिद्ध किया है कि यह राष्ट्र हितैषी औद्योगीकरण नहीं है, वरन् राष्ट्र–संरक्षक स्वार्थीकरण है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है, समाजगत मानवीय गरिमा नहीं। व्यापारियों की चालें, दांव–पेंच, चाटुकारिता नैतिक पतन और वाकपटुता को इस संदर्भ प्रेमचंद ने उघाड़ कर रख दिया है। इस प्रधान समस्या के साथ–साथ देशी रियासतों की समस्या को भी लेखक ने उठाया है। जिसमें राजाओं की पंगुता, कायरता, वैभव–विलास और कुटिलता को प्रगट कर उनके मुखों पर चढ़े हुए देशभक्ति और प्रजा वत्सलता के नकली चेहरे नोंचकर जनता के सामने उनका वास्तविक रूप अनावश्त कर दिया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों की लोकप्रियता का रहस्य उनकी समस्यामूलकता ही है। उपन्यास कला के तत्वों की दृष्टि से तो वे द्वितीय श्रेणी में ही आते हैं किन्तु प्रेमचंद ने समस्या–निरूपण की तुलना में तत्व निरूपण का महत्व अनिवार्य आवश्यकता तक ही सीमित करके उसे गौण और नगण्य माना है और अपने उपन्यासों में वे समस्या का निरूपण ही नहीं करते अपितु उसका हल भी प्रस्तुत करते हैं। कहना चाहिए कि प्रेमचंद के उपन्यासों का मुख्य कलात्मक तत्व 'समस्या' ही है, दूसरा नहीं और उनका मूल्यांकन भी इसी तत्व के आधार पर करना उचित है।

"रंगभूमि" प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों के सदृश्य समस्यामूलक उपन्यास ही है। उसके विशाल केन्वास पर मुख्यत: दो समस्याओं का विस्तृत निरूपण है–

१. औद्योगीकरण की समस्या।
२. भारतीय रियासतों की समस्या।

इन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में "रंगभूमि" कालीन भारतीय ग्राम्य और नागरिक समाज उसकी कथा की आधार–भित्ति बनी है, जिसके साथ अनेक उप समस्याएं भी कौंध उठी हैं। जैसे राष्ट्रीय एवं राजनीतिक समस्याएं, सामाजिक और पारिवारिक समस्याएं आदि। ये उपसमस्याएं प्रधान समस्याओं को खोलने में सहायक बनती हुई उन्हें आवेग प्रदान करती है। इसी लिए डॉ. रामरतन भटनागर का यह कहना उचित ही है कि– "वास्तव आवेग में "रंगभूमि" में स्वतंत्रता पूर्व भारत की सारी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याएं आ जाती हैं। ऐसी विशाल चित्रपटी भारतवर्ष के किसी उपन्यासकार ने ग्रहण नहीं की।

आधुनिक महाजनी के द्वारा व्यापारियों तथा उद्योगपतियों के निहित स्वार्थों को सर्वाधिक प्रोत्साहन मिला है, जिससे हमारे देश की पुरानी ग्राम्य–व्यवस्था क्षार–क्षार हो गई है। प्रतियोगिता, लोभ और स्वार्थ पर आधारित औद्योगीकरण प्रधान समस्या बनकर मौलिक संघर्ष का कारण सिद्ध हुआ है। "रंगभूमि" इस मौलिक संघर्ष का महाभारत है। पांडेपुर औद्योगिक शोषण का केन्द्र है। यह पुरानी ग्रामीण व्यवस्था और नई महाजनी शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष का केन्द्र है। किन्तु यह संघर्ष एक गांव तक ही सीमित नहीं है, इस संघर्ष के रंगमंच की स्थापना बड़े पैमाने पर तीन भिन्न–भिन्न स्थानों पर की गई है। पुरानी ग्राम्य व्यवस्था पर पड़ा हुआ पूंजीवादी सभ्यता का तीव्र प्रभाव ही उपन्यास की वस्तु का प्रेरक स्रोत

है। औद्योगीकरण ने पुरानी सभ्यता के मूल्यों को तोड़ना आरम्भ कर दिया था, साथ ही उसके कारण गांव के सामाजिक तथा आर्थिक सूत्र टूटने लगे थे। जमींदार और किसान के बीच का सम्पर्क अब पूंजीपति और मजदूर का सम्पर्क बनने जा रहा था। इस प्रकार प्रेमचंद समाज की तह में बैठकर औद्योगीकरण के दुष्परिणाम की घोषणा करते हैं।

जन सेवक औद्योगिक व्यवस्था का प्रतिनिधि है। वह पूंजीपतियों के प्रत्येक हथकण्डे से परिचित है। उसके पास पहुंच है, सिफारिशें है, चापलूसी है, कपट है और इन सबको मिलाकर औद्योगीकरण के पक्ष की दलीले हैं। वह समय के रूख को खूब पहचानता है। अवसर की नाड़ी की परख उसकी बड़ी गहरी है, जैसा कि हर सफल व्यापारी को होती है। वह धन के बल पर ऐसा जाल बनता है कि जनता, शासन–तंत्र और नेता सब उसमें उलझ जाते हैं। अपनी शक्ति तथा सफलता के प्रति आश्वस्त होकर वह कहता है– **"यह व्यापार राज्य का युग है। यूरोप के बड़े–बड़े शक्तिशाली साम्राज्य पूंजीपतियों के इशारों पर बनते–बिगड़ते हैं। किसी गवर्नमेंट का साहस कि उनकी इच्छा का विरोध करे।"**

कुंवर भरतसिंह से औद्योगीकरण के समर्थन में दलील पेश करते हुए वह कहता है– "हमारी जाति का उद्धार कला–कौशल और उद्योग की उन्नति में है। इस सिगरेट के कारखाने से कम से कम एक हजार आदमियों के जीवन की समस्या हल हो जाएगी–मेरा कारखाना ऐसे बेकारों को अपनी रोटी कमाने का अवसर देगा।"

पूंजीपति का एकमात्र लक्ष्य धनोपार्जन होता है। जनसेवक के शब्दों में उसका सिद्धांत है, "कम से कम खर्च और ज्यादा नफा।" इसकी व्यावसायिक बुद्धि धर्म को केवल स्वार्थ–संगठन मानती है। एक पूंजीपति की दृष्टि में धर्म–धर्म है, व्यापार –व्यापार, परस्पर कोई संबंध नहीं। "संसार में जीवित रहने के लिए किसी व्यापार की जरूरत है धर्म की नहीं। धर्म तो व्यापार का श्रृंगार है। वह धनाधीशों को ही शोभा देता है। खाली पेट खुदा का नाम लेना पाप है।"

ताहिर अली से वह एक घुटे हुए व्यापारी की तरह कहता है, "आप सोच रहे होंगे, मैंने बातों में रंग को भरा, केवल घटना का यथार्थ वृतान्त क्यों न कह सुनाया, किन्तु सोचिये बिना रंग भरे मुझे वह फल प्राप्त हो सकता? संसार में किसी काम का अच्छा या बुरा होना उसकी सफलता पर निर्भर है।"

अधिकारियों से सांठ–गांठ करने के पश्चात् अवसर मिलते ही वह पांडेपुर के किसानों से मिलता है और उन पर कारखानों के फायदों का ऐसा रंग चढ़ता है कि सबके सब उसके पक्ष में हो जाते हैं। बजरंगी को दुध, मलाई, मक्खन और उपले बेचने की सुविधा, ठाकुरदीन को पान की चौगुनी बिक्री की सुविधा, जगधर को निःशुल्क पढ़ाई के लिए मदरसे की सुविधा, नायकराम के तीर्थ–यात्रियों के लिए धर्मशाले की सुविधा का बखान कर वह कारखाने से सबका नफा ही नफा दिखाता है।

लेखक ने जनसेवक के कथनों के द्वारा औद्योगीकरण का प्रभाव दिखाने में दोहरी नीति से काम लिया है। एक तो यह कि पूंजीवादी सभ्यता किस प्रकार स्वराजों से लेकर सामान्य जनता तक प्रलोभन और लपक पैदा कर रही है और दूसरी यह कि पूंजीपति कितने चातुर्य से सारे समाज को धोखा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता रहा है, कर रहा है। इस प्रकार प्रेमचंद औद्योगीकरण के विरूद्ध व्यापक पृष्ठभूमि तैयार करते दिखाई पड़ते हैं। वे जनसेवक से ही कहलवाते हैं, "तुमने देश की व्यावसायिक उन्नति के लिए नहीं अपने स्वार्थ के लिए यह प्रयत्न किया है। देश के सेवक बनकर तुम अपनी पांचों उंगलियां घी में रखना चाहते हो। तुम्हारा मनोवांछित उद्देश्य यही है कि नफे का बड़ा भाग किसी न किसी हीले से आप हज्म करो।"

"रंगभूमि" में प्रस्तुत इस समस्या के अंतर्गत लेखक का उद्देश्य पूंजीवाद से उत्पन्न बुराईयों का उल्लेख करना है, इसलिए वह सूरदास की कथा को गांवों के औद्योगीकरण के विरूद्ध एक चुनौती के रूप में खड़ा करता है। दो सभ्यताएं टकराती हैं– मुनाफा और प्रतियोगिता पर आधारित

Scanned with CamScanner

औद्योगिक सभ्यता से पारस्परिकता पर आधारित भारतीय ग्राम्य सभ्यता की टक्कर होती है। पहली का प्रतिनिधि जनसेवक है और दूसरी का सूरदास। सूरदास चट्टान की तरह दृढ़ है। वह इस बात की परवाह नहीं करता कि उसकी कोई मदद करेगा या नहीं वरन् अपनी आत्मशक्ति के बल पर गांव में कारखाना खुलने का विरोध करता है। वह गांव के लोगों को चेतावनी देते हुए भविष्यवाणी करता है– "जहां यह रौनक बढ़ेगी: वहां ताड़ी–शराब का भी तो प्रचार बढ़ जायेगा, कसबियां भी तो आकर बस जाएगी, परदेशी आदमी हमारी बहू–बेटियों को घूरेंगे–देहात के किसान अपना काम छोड़कर मजूरी के लालच में दौड़ेंगे, यहां बुरी–बुरी बातें सीखेंगे और अपने बुरे आचरण अपने गांव में फैलायेंगे। देहात की लड़कियां बहुएं मजूरी करने आएंगी और यहां पैसे के लोभ में अपना धरम बिगाड़ेंगें।" और कारखाना बन जाने पर एक दिन जगधर यह कहते सुनाई पड़ता है– "यह कारखाना क्या खुला हमारी तबाही आ गई। फायदा जरूर है। चार पैसे की आमदनी है, पहले एक ही खोंचा न बिकता था अब तीन–तीन बिक जाते हैं। लेकिन ऐसा सोना किस काम का, जिससे कान फटे!" और आंखों में आंसू भरकर सूरदास कहता है– मुझे तो इस पुतली घर में पीस डाला। इन्द्रवत से वह प्रार्थना करता है– "आप पुतली घर के मजूरों के लिए घर क्यों नहीं बनवा देते। ये सारी बस्ती में फैले हुए हैं और रोज उधम मचाते रहते हैं। हमारे मुहल्ले में किसी ने औरत को नहीं छेड़ा था, न कभी इतनी चोरियां हुई, न कभी इतने धड़ल्ले से जुआ हुआ, न शराबियों का ऐसा हुल्लड़ रहा।"

तात्पर्य यह कि प्रेमचंद औद्योगीकरण के दुष्परिणामों का वीभत्स चित्र प्रस्तुत करते हैं। उन्हें अपनी पुरानी समाज–व्यवस्था के प्रति अनुराग है, क्योंकि उसमें मानव मूल्यों का गौरव है, भले ही वह नष्ट प्राय हो गई है, पर उसके स्थान पर आई हुई नवीन सभ्यता तो और भी बदतर है क्योंकि उसमें मानव–मूल्यों का अभाव है। उसका आधार दासती, दरिद्रता और शोषण है, हिंसा और निर्ममता हैं, क्रूरता, लोलुपता और स्वार्थ है। आधुनिक शिक्षा इस व्यवस्था को बल देती है, अदालतें इसके लिए कवच हैं और पुलिस इसकी रक्षक है।

"रंगभूमि" देहाती जिंदगी के नाश की कहानी है। वह उसके नैतिक और आर्थिक पतन की लम्बी गाथा है, जिसका उत्तरदायित्व पश्चिमी सभ्यता पर है। लेखक ने इसमें ग्रामीणों की व्यापक दरिद्रता तथा औद्योगिक क्षेत्रों पर केन्द्रित पीड़ा का सविस्तार विवरण प्रस्तुत किया है, फलस्वरूप यह समस्या पूर्णरूप से निरूपित हो गई है।

(१६) प्रेमचंद के कथा साहित्य में हिन्दु–मुस्लिम संबंध (ओमप्रकाश सिंह) पृष्ठ–५८

समाज में सबसे निर्धन वर्ग किसानों का है परंतु उससे इतर एक और वर्ग है जो सम्पत्ति और मान–सम्मान में उससे भी गया–बीता है। यह वास्तव में वर्ग नहीं क्योंकि वर्ग से एक संगठन का बोध होता है। जैसा कि प्रेमचंद ने "कर्मभूमि" में लिखा है, किसान के लिए खेती एक सम्मान की वस्तु है। चाहे आधे पेट दिन बीते, चाहे कर्ज से सुलझने की सात जनम भी सम्भावना न हो, पर उसकी पुरौती का कोई साधन नहीं है। इस वर्ग में समाज के दलित, चमार, मेहतर आदि तथा समाज में फैले आवारे भिखमंगे और अनाथ बच्चे आते हैं। प्रेमचंद की सहानुभूति सहज ही उनकी ओर ढर आई है। समाज के विभिन्न वर्गों के चित्रण में उन्हें भी स्थान मिला है। वे किसी विस्तृत परिणामा पर किए गए आंदोलन में भाग नहीं लेते, सामाजिक क्रांति में उनका विशेष महत्व हो, ऐसा भी नहीं, फिर भी सामाजिक परिवर्तन में उन्हें भुलाया नहीं जा सकता है। "हरिजन–आन्दोलन की महत्ता जो गांधीजी के लिए है, वह शायद प्रेमचंद के लिए न थी, स्वराज्य–प्राप्ति को साधन उनके लिए राष्ट्रीय आंदोलन था, न कि हरिजन–उद्धार।" फिर भी उसका चित्रण प्रेमचंद ने किया है और सामाजिक क्रांति के लिए उसकी यथोचित महत्ता को भी स्वीकार किया है। उनके चित्रण में विशेषता यह है कि अन्य रोमांटिक लेखकों की भांति उन्होंने अपने आवारों को आदर्श रूप में नहीं रखा, न समाज के

Scanned with CamScanner

शिक्षित व्यक्तियों को उनकी तुलना में नितांत अधम और पातकी ही बताया है। स्वार्थ—सेवा, आलस्य व्यसनों से प्रेम आदि उनमें दुर्गुण हैं, परंतु ये दुर्गुण उस कलुषि सामाजिक व्यवस्था की ओर इंगित करते हैं, जिससे वे उत्पन्न होते हैं।

मध्यमवर्ग और देहात के किसान वर्ग में यह भावना व्याप्त है कि समाज के बाहर व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं। बात जितनी सच है, उतनी ही आज व्यंग्यपूर्ण बन गई है, उसका अस्तित्व हमें सामाजिक दंड मिलने पर ही ज्ञात होता है। सरकार की पुलिस की तरह वह कानून तोड़ने पर हमें तुरंत गिरफ्तार कर लेता है, परन्तु रचनात्मक कार्यक्रम के नाम पर उसके पास कुछ नहीं है। हमारे बच्चे अशिक्षित और भूखे रहें परंतु इसके लिए समाज का कोई उत्तरदायित्व नहीं है। होरी के मर जाने पर गोदान लेने के लिए दातादीन हाथ फैलाए हुए अंत में भी दिखाई देते हैं।

जनसेवक बनारस में पांडेपुर के पास सिगरेट का कारखाना डालना चाहता था और इसके लिए उसने सूरदास की जमीन लेने का निश्चय किया। सूरदास जमीन देना नहीं चाहता था। गांव वाले यह सोच रहे थे कि ताहिर अली ही जनसेवक को इस जमीन के लिए प्रेरित कर रहा है। ताहिर अली को जब यह बात मालूम होती है तो सोचता है कि गांव वालों की बददुआएं हमें ही लगेंगी। वह जनसेवक के पास जाता है और प्रयास करता है कि वे कोई दूसरी जमीन खरीद लें। वह उन्हें समझाता है कि उस जमीन को लेना ठीक नहीं है।

"हुजूर उस अंधे की जमीन लेने का ख्याल छोड़ दें तो बहुत ही मुनासिब हो।.... .... हुजूर यह सब अजाब का काम है। सैकड़ों आदमियों का काम उस जमीन से निकलता है, सबकी गायें वहीं चरती हैं, बारातें ठहरती हैं, प्लेग के दिनों में लोग वहीं झोपड़े डालते हैं, वह जमीन निकल गई, तो सारी आबादी को तकलीफ होगी और लोग दिल में सैकड़ों बददुआएं देंगे। इसका अजाब जरूर पड़ेगा।"

ताहिर अली भी इस पक्ष में है कि सूरदास की जमीन यथास्थिति कायम रहे, भले ही उसे अजाब का डर हो या और कुछ। अगर गांव वालों का कल्याण उस जमीन से हो रहा है तो उसे गांव वालों के संरक्षण में ही रहना चाहिए। इसके बारे में वह जनसेवक से बात करता है। जनसेवक क्रुद्ध होकर उसे नौकरी से निकालने की धमकी देता है। यहीं पर ताहिर अली लाचार हो जाता है। उसकी आर्थिक स्थिति इतनी विपन्न है कि सब कुछ सहन करके वह नौकरी करता रहता है। गांव वालों का भ्रम बना ही रहा। गांव के बच्चे भी उसे अपना दुश्मन माते हैं और उसे देखकर बोलियां बोला करते हैं। ताहिर अली रास्ता बचाकर निकल जाता है। बच्चों के मुंह कौन लगे। एक दिन मिठुआ और घीसू ने जानबुझकर ताहिर अली के घर के लड़कों से मारपीट की। लड़कों की मारपीट ने उग्र रूप लिया और उसमें बड़े लोग भी शामिल हो गए। बजरंगी की लाठी से ताहिर अली के कंधे की हड्डी टूट गई। लोगों ने बीच—बचाव करके मारपीट और झगड़े को शांत किया। स्वयं बजरंगी की पत्नी जमुनी ताहिर अली के घर गई और उसकी विमाताओं को कुछ रूपए—पैसे देकर इस मामले को यहीं रोकने की गुजारिश की। एक मुसलमान और हिन्दु में मारपीट हो जाती है परंतु प्रेमचंद इसे साम्प्रदायिक रंग नहीं देते। यह मामला भी उसी तरह हल होता है जिस प्रकार से गांव के अन्य मामल। यहीं घटना अगर दो हिन्दुओं के बीच में होती तो उसका भी हल उसी प्रकार होता। कुल्सूम इस झगड़े के लिए ताहिर को दोषी मानती है, क्योंकि लड़कों में तो लड़ाई—झगड़ा होता ही रहता है। बड़ों को इतनी जल्दी क्रोध में नहीं आना चाहिए।

ताहिर अली का खर्च बढ़ गया और आमदनी सीमित रही। परिणामस्वरूप गांव के कई लोगों का कर्जदार हो गया। बजरंगी जगाधर और ठाकुरदीन आदि कई लोगों का बकाया ताहिर अली को चुकाना था, परंतु वह चुका पाने में असमर्थ था। हीले—हवाले करके लोगों को टालता रहा।

सामाजिक रूढ़ियों के संदर्भ में प्रेमचंद ने

Scanned with CamScanner

वैवाहिक रूढ़ियों जैसे अनमेल विवाह, बहुविवाह, अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह, पुनर्विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, वृद्धविवाह, पतिव्रत धर्म तथा वारंगना सचेतना के साथ लिखा है। तत्कालीन समाज में यह बात घर कर गई थी कि तीन पुत्रों के बाद जन्म लेने वाली पुत्री अपशकुन होती है। उन्होंने इस रूढ़ि का अपनी कहानी 'तेत' के माध्यम से कड़ा विरोध किया है। होली के अवसर पर पाये जाने वाली रूढ़ि की निन्दा करते हुए वह कहते हैं कि अगर पीने–पिलाने के बावजूद होली एक पवित्र त्यौहार है तो चोरी और रिश्वतखोरी को भी पवित्र मानना चाहिए। उनके अनुसार त्यौहारों का मतलब है अपने भाइयों से प्रेम जटिलताओं के बावजूद आतिथ्य–सत्कार को मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लेने जैसे रूढ़ि की भी उन्होंने निन्दा की है।

इन कहानियों में प्रेमचंद ने एक इतिहासकार की भांति राष्ट्रीय अंदोलन के चित्र खींचे हैं। गाँधी जी से प्रेमचंद काफी प्रभावित थे। उन्होंने विश्वास जैसी कहानी के माध्यम से गाँधी जी के आदर्शों को लोगों के सामने प्रस्तुत किया।

जहां तक रंगभूमि के अंत का प्रश्न है, जब प्रेमचंद को कथा का दुखान्त करना होता है तो ऐसा वह प्रायः पात्रों की मृत्यु, हत्या अथवा आत्महत्या द्वारा करते हैं। रंगभूमि में इन्द्रदत्त की मृत्यु गोली लगने से होती है, विनय आत्महत्या करते हैं, सोफिया गंगा में डूब कर प्राणान्त करती है, सूरदास अस्पताल में मर जाता है और राजा महेन्द्र कुमार सिंह सूरदास की प्रस्तर प्रतिमा के नीचे दब कर जान से हाथ धो बैठते हैं। इस प्रकार रंगभूमि की कथा दुखान्त बन जाती है।

संक्षेप में "रंगभूमि" अपने राजनैतिक पक्ष में भारतीय जनता को सावधान करते हुए यह स्पष्ट करना चाहती है कि अंग्रेजी शासकों से किसी भी प्रकार की आशा रखना मूर्खता होगी। अतएव जनता को चाहिए कि वह अन्याय के खिलाफ बगावत का झण्डा खड़ा कर दे, घर–घर और व्यक्ति–व्यक्ति में असंतोष भड़काए। आर्थिक और सामाजिक पक्ष में रंगभूमि इस उद्देश्य को प्रगट कर रही है कि जागो और मिलकर अपनी राह के रोड़ों को हटाओ, आगे बढ़ो और प्रगति की उस मंजिल पर पहुंचा, जहां न तुम्हारे चेहरों पर पूँजीवाद के दाग हों और मुख पर स्वार्थ की विकृति। तात्पर्य यह है कि जन–जन में राजनैतिक दासता के फलस्वरूप जो असंतोष था, "रंगभूमि" में प्रेमचंद ने उसे वाणी दी है। ग्रामीण जीवन, राव–राजे, किसान–नागरिक और उसके अधीनस्थ मजदूर आदि की मानसिक विचार धारणाएं प्रकट करना "रंगभूमि" का उद्देश्य है।

प्रेमचंद वस्तुतः सजीव वातावरण के सफल चितेरे हैं। ग्रामीण वातावरण, सत्ताधारियों का आतंक, पूँजीपतियों का आतंक, पूँजीपतियों की महाजनी वृत्ति अपनी धरती के लिए प्राण पथ से जुझते हुए कृषक आन्दोलनों की जन समूहों का प्रबल आवेग आदि का वे ऐसा सजीव वातावरण प्रस्तुत करते हैं कि उनके उपन्यास सहज ही आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं।

संदर्भ सूचीः–

१. प्रेमचंद के कथा साहित्य में हिन्दू–मुस्लिम संबंध–ओम प्रकाश सिंह

२. प्रेमचंद एक कृति, व्यक्तित्व–जैनेन्द्र कुमार

३. प्रेमचंद–डॉ.रामविलास शर्मा

४. रंगभूमि–प्रेमचंद.

❑❑❑

https://goo.gl/r4yVdJ

UGC Approved

Indexed (IIJIF)

Refereed Journal

Impact Factor

[illegible]blisher & Owner

[illegible] Rajendra Ghodke

H[illegible]han Publication Pvt.Ltd.

At.[illegible]mbaganesh, Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra)

Edit By

Dr. Gholap Bapu Ganpat

Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515

(Maharashtra, India)

Cell : +91 75 88 05 76 95

₹ 300/-

ISSN 2394-5303

Scanned with CamScanner